हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

प्रशिक्षण कार्यक्रमः-

"वानिकी में एकीकृत कीट- प्रबंधन एवं औषधीय पौधों के कीटों व बीमारियों का नियन्त्रण" (16-18 फरवरी, 2017)

वानिकी में कीट व रोग प्रबंधन की महत्वता को ध्यान में रखते हुये हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने एकीकृत कीट- प्रबन्धन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया एवं हिमाचल प्रदेश के किसानों व राज्य वन विभाग के क्षेत्रीय कर्मचारियों को वन प्रबंधन के महत्व पर विचार- विमर्श करने के लिए एक मंच प्रदान किया । प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य उत्तर – पश्चिमी हिमालय के वृक्षों व औषधीय पौधों के कीटों व बीमारियों का अध्ययन व नियन्त्रण था । प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया जिसमें चम्बा, किन्नौर, रामपुर व धर्मशाला वन मण्डलों के वनविद्, वन रक्षक, उपवन राजिक एवं शिमला के किसान शामिल थे ।

डॉ॰ वी॰ पी॰ तिवारी, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने कार्यक्रम का उदघाटन किया एवं विभिन्न वृक्ष प्रजातियों के विभिन्न कीटों की घटनाओं के प्रति संवेदना व्यक्त की । इस तरह की घटनाएं नाजुक पारिस्थितिकीय तंत्र में देशी व विदेशी पौधों के सूखने की प्रक्रिया को बढावा देती हैं । उन्होने ज़ोर दिया कि इन समस्याओं से निपटने का कारगार तरीका महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजतियों के लिये एकीकृत कीट-प्रबंधन का विकास करना है एवम् इसे राज्य वन विभाग को उपलब्ध करवाना है । उन्हेंने यह भी कहा कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के द्वारा किये गये शोध कार्यों का प्रौद्योगिकी स्थानान्तरण भी करना चाहिऐ जसे हम "लैब- लैंड पॉलिसी" भी कहते हैं ताकि यह जन उन्मुखी कार्यक्रम बन सके जिससे सामान्य लोगों का भला हो ।

डॉ॰ एस॰ पी॰ भारद्वाज, पूर्व कुलपित ने आई॰ वी॰ एम॰ पर एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया । एक ध्यान केन्द्रित दृष्टिकोण के साथ कीट प्रबंधन के पीछे छिपे विज्ञान, में वानिकी के क्षेत्र में चुनौतियों और प्रौद्योगिकी के अभिग्रहण को उजागर करने की दिशा में हिमालयन के संदर्भ में चर्चा की ।

उन्होंने औषधीय पौधों के क्षेत्र में आई॰ पी॰ एम॰ प्रौद्योगिकी अपनाने में भाग लेने वालों की सुरक्षा से संबंधित मुद्दों के बारे में भी जानकारी दी और कीट महामारी की स्थिति में वृक्षारोपण करने की प्रतिक्रिया पर सुझाव दिए ।

साथ ही डॉ॰ अश्वनी तपवाल नें, औषधीय पौधों और प्रजातियों के पेड़ों में रोगों के प्रबंधन में ट्राइकोडर्मा एक जैव- नियन्त्रण एजेंट के रूप के बारे में बात की थी । उन्होंने शंकुधारी वनों में विभिन्न बीमारियों जैसे जड़ संडाधं, हरे रोट और गुलाबी रोग पर भी चर्चा की ।

श्री पी॰ एस॰ नेगी ने हिमाचल प्रदेश के महत्वपूर्ण औषधीय पौधों के उपयोग और उचित पहचान के मुद्दे को सम्बोधित करते हुए उस पर चर्चा की । उसके पश्चात डॉ॰ पवन कुमार ने अपनी प्रस्तुति में नर्सरी में कीट प्रबंधन से सम्बधित मुद्दों पर ध्यान केंन्द्रित किया । उन्होंने प्रतिभागियों को नर्सरी में विभिन्न प्रकार के कीटोगं का सामना करना और उनके नियंत्रण के तरीकों से अवगत कराया ।

श्री प्रदीप भारद्वाज, उप अरण्यपाल, ने हिमाचल प्रदेश में औषधीय पौधों के व्यवसायिकरण पर संक्षिप्त रूप में मार्ग दर्शन किया । उन्होंने अत्याधिक उपयोगी और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती की भी हिमायत की ।

प्रतिभागियों को चैल के पास वनझाानी के जंगल में ले जाया गया जहां बड़ी संख्या में देवदार के पेड़ों को सड़ांध रोग के कारण मृत सुचित किया गया । उन्हें समझाया गया कि कैसे प्रभावित बन क्षेत्रों में आई॰पी॰ एम॰ के कार्यक्रम को बीमारियों को रोकने में उपयोगी सिद्ध किया जाए ।

डॉ॰ रणजीत सिंह, प्रशिक्षण समन्वयक ने अपनी प्रस्तुति में इस तथ्य पर बल दिया कि पेड़-पौधे एवं कृषि फसलें निर्वाहन स्त्रोत प्रदान करते हैं जो कि फसलों के लम्बे अवर्तन (Long Rotation) के कारण इनसे जुड़े हुए कीटों के लिए आधार है और कीट-संख्या निरन्तर बढ़ती है और स्थिर वनों को घेर लेती है । उन्होंने वनों के पेड़-पौधों

के महत्व और वनों के स्वस्थ्य पौधरोपण के प्रबन्धन पर सम्बोधन किया । उन्होंने बान ओक वनों में भारतीय जिप्सी पंतगों के आक्रमण सहित हिमालय के देवदार वनों में देवदार निस्पत्रक का बड़े पैमाने पर हो रहे विस्फोट की तरफ प्रतिभागियों का ध्यान केन्द्रित किया और यह भी चेतावनी दी कि अगर इस क्षेत्र में पतंगों ओर बीमारियों के प्रबंधन पर अगर समयबद्ध ध्यान नहीं दिया जाता है तो यह बहुत ही ज्यादा नुकसानदेह साबित होगा । उन्होनें एकीकृत कीट- प्रबंधन पर एक त्वरित समीक्षा की और कहा कि जैविक विज्ञान ने कीट- प्रबंधन पौद्योगिकी के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर दिये हैं । कीट आपस में संचार के लिए विभिन्न रासायनों का प्रयोग करते हैंये फीरोमोन कहलाता है । अंतिम दिन में प्रतिभागियों से प्रतिक्रिया प्राप्त हुई थी । प्रशिक्षण के अंतिम दिन निदेशक, डॉ॰ वी॰ पी॰ तिवारी, ने प्रतिभागियों को प्रतिभागिता प्रमाण पत्र वितरित किये और अन्त में प्रशिक्षण समन्वयक डॉ॰ रणजीत सिंह ने प्रतिभागियें एव सभी का औपचारिक धन्यवाद किया ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियाँ

क्षेत्रीय भ्रमण

Training On
Integrated Pest Management in Forestry and
Control of Insect-pests & Diseases in Medicinal Plants
Under Project
Protection Technology to Local Co
2017
New Delhi
Shimla (H.P.)

समापन समारोह

Training On
Integrated Pest Management in Forestry and
Control of Insect- pests & Diseases in Medicinal Plants
Under Project
Biological Control of Thysanoplusia orichalcea (F.) (Lepidoptera: Noctuidae): A Potential Insect- pest of
-Western Himalayas & Extension of Protection Technology to Local Communities
Dated: 16th-18th February, 2017
cinal Plants Board, New Delhi
st Research Institute, Shimla
ch Institute, Panthaghati, Shimla (H.P.)

Training On
Integrated Pest Management in Forestry and
Control of Insect- pests & Diseases in Medicinal Plants
Under Project
Biological Control of Thysanoplusia orichalcea (F.) (Lepidoptera: Noctuidae): A Potential Insect- pe
Saussurea costus in North-Western Himalayas & Extension of Protection Technology to Local Commu
February, 2017
Medicinal Plants Board, New Delhi
n Forest Research Institute, Shimla
esearch Institute, Panthaghati, Shimla (H.P.)

February, 2017
yan Forest Research Institute, Shimla

Medicinal Plants w.r.t. Agro-climatic Zones in H.P.

Training On
Integrated Pest Management
in Forestry and Control of Insect-pests
& Diseases to Medicinal Plants
Under Project
Dated: 16th -18th February, 2017

मीडिया कवरेज

17-02-2017

Training in pest management

TRIBUNE NEWS SERVICE

SHIMLA, FEBRUARY 16

A three-day training programme on 'Integrated Pest Management in Forestry and Control of Insects, Pests and Diseases in Medicinal Plants' started at Himalayan Forest Research Institute (HFRI) today.

The programme focuses on the pest and disease incidence in trees and medicinal plants in the North-Western Himalayas and their control measures.

Dr VP Tewari, Director, HFRI, expressed concern over the incidence of different pests in various tree species which contributed towards the drying of indigenous as well as exotic species planted in the fragile ecosystem.

He said the best way to deal with such problems was to develop species specific integrated pest management technology and make information available to the end users like the Forest Department.

He said the research carried out by the HFRI should also ensure the transfer of technology, from "Lab to Land" so that it became a public-orientated programme for the ultimate benefit of the common man.

Dr Ranjeet Singh, training coordinator, HFRI, drew the attention of the participants towards the large-scale out-break of deodar defoliator in the forest of outer Himalayas.

He said due to the climate change, the pest and disease outbreaks had been observed in many tree species causing a serious damage.

Foresters, forest guards from Chamba, Kinnaur, Rampur, Dharmshala and farmers from Shimla district attended the programme.

Shimla E-paper
DainikBhaskar.com

17.02.17

प्रशिक्षण कार्यक्रम एचएफआरआई वृक्षों पर लगने वाले कीटों व बीमारियों पर किया मंथन

शोधों को किया जाना चाहिए सार्वजनिक

सिटी रिपोर्टर | शिमला

वानिकी में समन्वित कीट प्रबंधन एवं औषधीय पौधों के हानिकारक कीटों व बीमारियों का नियंत्रण पर एचएफआरआई शिमला में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ वीरवार को निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने किया। 18 फरवरी तक चलने वाले इस कार्यक्रम का उद्देश्य उत्तर-पश्चिमी हिमाचल क्षेत्र के वृक्षों व औषधीय पौधों में लगने वाले कीटों, बीमारियों व उनके नियंत्रण पर केंद्रित है। डॉ. तिवारी ने चिंता जताते हुए कहा कि विभिन्न वृक्ष प्रजातियों पर लगने वाले गंभीर कीटों जो नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र में देशी एवं विदेशी दोनों तरह के वृक्षों को सुखा देते हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह की कठिनाइयों से निपटने का सबसे कारगर तरीका यह है कि महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों के लिए विशिष्ट प्रजाति कार्यक्रम बनाए जाएं एवं उन्हें उपयोगकर्ता जैसे कि राज्य वन विभाग को उपलब्ध करवाए जाएं। उन्होंने यह भी कहा कि एचएफआरआई की ओर से जो भी शोध कार्य किए जाते हैं उनका प्रौद्योगिकी हस्तांतरण सुनिश्चित करना चाहिए, ताकि यह सार्वजनिक उन्मुख कार्यक्रम बन सके जिससे आमजन का हित हो सके। उन्होंने औषधीय पौधों की खेती एवं उनका बीमारियों से बचाव वैज्ञानिक तरीके से करने के लिए की भी सलाह दी।

एचएफआरआई में आयोजित कार्यशाला के दौरान मौजूद प्रशिक्षणार्थी।

प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. रणजीत सिंह ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा कहा हिमालय क्षेत्र में देवदार, बान ओक तथा कैल के वनों में विकराल समस्याओं की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि अगर इनको समय पर नियंत्रित नहीं किया गया तो यह विकराल रूप धारण कर वनों नष्ट कर देंगी। वृक्ष प्रजातियों पर बीमारियों के नियंत्रण के लिए वैज्ञानिक प्रबंधन की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रशिक्षण समन्वयक ने औषधीय पौधों की पैदावार तथा बीमारियों व कीड़ों से इनकी देख-रेख को भी चिंहित किया। प्रदेश वन विभाग के चंबा, किन्नौर तक धर्मशाला वन मंडलों से आए फॉरेस्ट गार्ड, रेंजरों वन तथा शिमला के किसान आदि मौजूद थे।